

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)



जय किसान
जय कृषि विज्ञान

डॉ. भाष्कर दुबे
मुख्य संपादक
ediorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार
विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक – डॉ. भाष्कर दुबे

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका
पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
230124
कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007
Website – www.naso.org.in
E-mail – editorinchief@naso.org.in
Contact – 9936902749 / 7068708058

अमरुद में रोग प्रबंधन

डॉ अंकित सिंह सहायक प्राध्यापक, मंदसौर विश्वविद्यालय

डॉ अखिलेश कुशवाहा सहायक प्राध्यापक, कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यालय, लद्दाख विश्वविद्यालय, लद्दाख

डॉ भास्कर दुबे सहायक प्राध्यापक, के.आइ.टी. कॉलेज, पीआरएसयू प्रयागराज

अमरुद भारत का एक अत्यंत लोकप्रिय फल है, जिसे “गरीबों का सेब” कहा जाता है। यह विटामिन 'C', 'A', कैल्शियम, फॉस्फोरस और लौह तत्वों का अच्छा स्रोत है। इसकी खेती उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में सफलतापूर्वक की जाती है। किंतु अमरुद की उच्च उत्पादन क्षमता पर अनेक रोगों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः इन रोगों की पहचान एवं वैज्ञानिक प्रबंधन आवश्यक है।

प्रमुख रोग एवं उनके प्रबंधन

1- मुरझान (WILT)

कारक: *Fusarium oxysporum* या *Rhizoctonia solani*

लक्षण:

- पौधों की पत्तियाँ पीली होकर सूखने लगती हैं।
- जड़ों में सङ्ग दिखाई देती है।
- धीरे-धीरे पूरा पौधा मुरझा कर सूख जाता है।

प्रबंधन:

- खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।
- रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें।
- पौधारोपण से पूर्व 2-3 किग्रा/गड्ढा गोबर की खाद में 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर मिलाएँ।
- रोग प्रारंभ होने पर मिट्टी में कार्बोन्डाजिम 0.1% या कैप्टान 0.2% का छिड़काव करें।
- जैव नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा हार्जिनियम (*Trichoderma harzianum*) का प्रयोग करें।

2- फल सङ्गन (FRUIT ROT / ANTHRACNOSE)

कारक: *Colletotrichum gloeosporioides*

लक्षण:

- फलों पर छोटे काले धब्बे बनते हैं, जो धीरे-धीरे बड़े होकर धंसे हुए दाग का रूप ले लेते हैं।
- फलों की सतह पर गुलाबी बीजाणु चूर्ण दिखाई देता है।

प्रबंधन:

- संक्रमित फलों को तोड़कर नष्ट करें।
- 10-15 दिन के अंतराल पर कार्बोन्डाजिम 0.1% या मैन्कोज़ेब 0.25% का छिड़काव करें।
- फलों की तोड़ाई के बाद गर्म पानी (50°C) में 5 मिनट डुबोकर सुखाएँ।
- पौधों में पर्याप्त दूरी रखें ताकि वायु संचार बना रहे।

3- पत्तों का धब्बा रोग (LEAF SPOT)

कारक: *Cercospora psidii* या *Pestalotia psidii*

लक्षण:

- पत्तियों पर भूरे या काले गोल धब्बे बनते हैं।
- गंभीर अवस्था में पत्तियाँ झड़ जाती हैं, जिससे फल विकास प्रभावित होता है।

प्रबंधन:

- रोगग्रस्त पत्तियों को तोड़कर नष्ट करें।
- कॉपपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3%) या मैन्कोज़ेब (0.25%) का छिड़काव करें।
- रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।

4- गाल रोग/ पत्ती फुलकन (GUAVA RUST / LEAF GALLS)

कारक: *Algal pathogen (Cephaleuros virescens)*

लक्षण:

- पत्तियों की ऊपरी सतह पर लाल-भूरे उभरे हुए धब्बे बनते हैं।
- बाद में ये धब्बे सूखकर झड़ने लगते हैं।

प्रबंधन:

- संक्रमित पत्तियाँ व टहनियाँ काटकर नष्ट करें।
- 1% बोर्डो मिश्रण या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3%) का छिड़काव करें।

अमरुद में रोग प्रबंधन एक समग्र दृष्टिकोण की मांग करता है जिसमें स्वच्छ कृषि पद्धतियाँ, जैविक नियंत्रण, और रासायनिक उपचार का संतुलित उपयोग आवश्यक है। समय पर रोग पहचान और नियंत्रण से फल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों में वृद्धि की जा सकती है।

5 - फूल एवं फल झड़न (DIEBACK / BLOSSOM DROP)

कारक: *Botryodiplodia theobromae*

लक्षण:

- टहनियों के सिरों से सूखना आरंभ होता है।
- फूल और छोटे फल झड़ जाते हैं।

प्रबंधन:

- सूखी टहनियों की छंटाई कर 1% बोर्डो पेस्ट लगाएँ।
- 15 दिन के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3%) का छिड़काव करें।

समन्वित रोग प्रबंधन (INTEGRATED DISEASE MANAGEMENT – IDM)

- स्वस्थ पौध सामग्री का उपयोग करें।
- फसल चक्र अपनाएँ — लगातार एक ही स्थान पर अमरुद न लगाएँ।
- संतुलित उर्वरक व जैविक खाद का प्रयोग करें।
- सिंचाई का नियंत्रण रखें, अधिक नमी से बचें।
- जैव-नियंत्रण एजेंट जैसे *Trichoderma* एवं *Pseudomonas fluorescens* का नियमित प्रयोग करें।
- रोगों का समय पर निदान कर रासायनिक नियंत्रण केवल आवश्यकता अनुसार करें।